सुगन्धित गुलाब की खेती

कृषि कुंभ (अगस्त, 2023),
खण्ड 03 भाग 03, पृष्ठ संख्या 25–26

सुगन्धित गुलाब की खेती

सूरज अवस्थी[1] सुनील कुमार[1] शिप्रा यादव[2] संकेत कुमार[3] एवं धीर प्रताप[4]
[1]कृषि प्रसार, [2]सस्य विज्ञान, [3]उद्यान विज्ञान एवं [4]सस्य विज्ञान, कृषि विभाग, इंटीग्रल विश्वविद्यालय, लखनऊ, भारत।
Email Id: surajavasthi95@gmail.com

परिचय

यूं तो कुदरत की बनाई हर चीज बेहद खूबसूरत है। फिर भी ये गुलाब ब्याह, शादियों से लेकर हर खुशनुमा पल में ये फूल अपनी रंगत बिखेरता है। ये एक अनमोल फूल है जिसकी आकर्षक बनावट, सुन्दर आकार, लुभावना रंग एवं अधिक समय तक फूल का सही दिशा में बने रहने के कारण इसे अधिक पसंद किया जाता है। यदि गुलाब की खेती वैज्ञानिक विधि से किया जाय तो इसके बगीचे से लगभग पूरे वर्ष फूल प्राप्त किये जा सकते हैं। जाड़े के मौसम में गुलाब के फूल की छटा तो देखते ही बनती है। इसके एक फूल में 5 पंखुड़ी से लेकर कई पंखुड़ियों तक की किस्में विभिन्न रंगों में उपलब्ध है। पौधे छोटे से लेकर बड़े आकार के झाड़ीनुमा होते हैं इसके फूलों का उपयोग पुष्प के रूप में, फूलदान सजाने, कमरे की भीतरी सज्जा, गुलदस्ता, गजरा, बटन होल बनाने के साथ–साथ गुलाब जल, इत्र एवं गुलकन्द आदि बनाने के लिए किये जाते हैं। ये न सिर्फ चेहरे पर रौनक ला देता है बल्कि जीने का अंदाज भी बताता है। जैसे फलों का राजा आम है तो फूलों की बेगम गुलाब है।

सबसे पुराना सुगन्धित पुष्प

गुलाब एक ऐसा फूल है, जिसके बारे में सब जानते हैं। गुलाब का फूल दिखने में जितना अधिक सुन्दर होता है। उससे कहीं ज्यादा उसमें औषधीय गुण होते हैं। यह सबसे पुराना सुगन्धित पुष्प है, जो मनुष्य के द्वारा उगाया जाता था। गुलाब अपनी उपयोगिताओं के कारण सभी पुष्पों में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। आमतौर पर गुलाब का पौधा ऊंचाई में 4–6 फुट का होता है। तने में असमान कांटे लगे होते हैं। गुलाब की 5 पत्तियां मिली हुई होती हैं। बहुत मात्रा में मिलने वाला गुलाब का फूल गुलाबी रंग का होता है। गुलाब का फल अंडाकार होता है। इसका तना कांटेदार, पत्तियां बारी–बारी से घेरे में होती है। पत्तियों के किनारे दांतेदार होती है। फल मांसल बेरी की तरह होता है जिसे 'रोज हिप' कहते हैं। गुलाब का पुष्पवृन्त कोरिम्बोस, पेनीकुलेट या सोलिटरी होता है।

भूमि, समय व पौधे लगाने का ढंग

जैविक कार्बनिक पदार्थ युक्त अच्छे जल निकासी वाली दोमट मिट्टी जिसका पीएच छह से आठ के बीच हो गुलाब के लिए उपयुक्त रहती है। गुलाब के लिए शुष्क ठंडा दिन का तापमान 20 से 30 डिग्री सेंटीग्रेट वाला मौसम उपयुक्त है। गुलाब को लगाने का समय मानसून के दिनों में जुलाई, अगस्त व सितंबर है। सितम्बर–अक्टूबर में तो यह भरपूर उगाया जाता है। गुलाब लगाने की सम्पूर्ण विधि और प्रक्रिया अपनाई जाए तो यह फूल मार्च तक अपने सौंदर्य, सुगंध और रंगों से न केवल हमें सम्मोहित करता है बल्कि लाभ भी देता है। पौधे लगाने से एक माह पूर्व दो से तीन फुट की दूरी पर दो से ढाई फुट गहरे गड्ढे बनाएं तथा व्यास दो फुट रखें। गड्ढे में पांच किलो गोबर की खाद व 20 मि.ली. क्लोरोपाइरीफोस मिलाकर गड्ढा भरकर पानी लगा दें।

जलवायु और भूमि

गुलाब की खेती उत्तर एवं दक्षिण भारत के मैदानी एवं पहाड़ी क्षेत्रों में जाड़े के दिनों में

www.KrishiKumbh.com

की जाती है। दिन का तापमान 25 से 30 डिग्री सेंटीग्रेट तथा रात का तापमान 12 से 14 डिग्री सेंटीग्रेट उत्तम माना जाता है। गुलाब की खेती हेतु दोमट मिट्टी तथा अधिक कार्बनिक पदार्थ वाली होनी चाहिए। जिसका पी.एच. मान 5.3 से 6.5 तक उपयुक्त माना जाता है।

पौधे तैयार करना

गुलाब के पौधे कलम, इनरचिंग व लेयरिंग विधि से तैयार कर सकते हैं। कलमी पौधे तैयार करने हेतु मूलवृंत रोजा इंडिका, वर्षोनिया, ओडारोटा या रोजा मल्टीफ्लोरा से कलम लेकर 10 से 1 सेमी फासले पर मध्यम सितंबर से मध्य अक्टूबर तक लगा दें। इन कलमों पर आए फुटाव पर जनवरी–फरवरी में उन्नत किस्म के पौधे से आंख लेकर चढ़ा देनी चाहिए। आंख चढ़ाने का काम मार्च तक भी कर सकते हैं। देशी गुलाब के पौध कटिंग द्वारा तैयार किए जाते हैं।

खाद व उर्वरक

कृषि विशेषज्ञों के मुताबिक 20 टन गोबर की गली–सड़ी खाद, 320 किलो यूरिया, 500 किलो सिंगिल सुपर फासफेट, 128 किलो म्यूरेट पोटाश प्रति एकड़ पर्याप्त रहता है। यूरिया की आधी मात्रा तथा शेष सभी खाद मध्य सितंबर से मध्य अक्टूबर तक डाल देनी चाहिए। बाकि बची यूरिया एक माह बाद डालनी चाहिए। जिंक, मैगनिशियम व मैगनीज सल्फेट में प्रत्येक का 0.3 प्रतिशत घोल नवंबर व फरवरी में छिड़काव करना चाहिए। सर्दियों में 10 दिन व गर्मियों में पांच–छह दिन के अंतर सिंचाई करते रहें।

ये हैं गुलाब की हाइब्रिड किस्में

वैसे तो विश्व भर में गुलाब की किस्मों की संख्या लगभग 20 हजार से अधिक है, जिन्हें विशेषज्ञों ने विभिन्न वर्गों में बांटा है लेकिन तक्तीकी तौर पर गुलाब के 5 मुख्य वर्ग हैं, जिन का फूलों के रंग, आकार, सुगंध और प्रयोग के अनुसार विभाजन किया गया है, जो इस प्रकार हैः हाईब्रिड टीज, फ्लोरीबंडा, पोलिएन्था वर्ग, लता वर्ग और मिनिएचर वर्ग।

- राजहंस
- जवाहर
- बिरगो
- गंगा सफेद
- मृगालिनी गुलाबी
- मन्यु डिलाइट नीला
- मोटेजुमा
- चार्लस मैलारिन गाढ़ा लाल
- फलोरीवंडा समूह की चंद्रमा सफेद
- गोल्डन टाइम्स पीला व जगुआर
- बटन गुलाब समूह की क्राई–क्राई
- देहली स्कारलेट
- लता गुलाब समूह के देहली व्हाइट
- पर्ल
- डीरथा पर्मिन

डठल की कटाई एवं पैकिंग

जब पुष्प कली का रंग दिखाई दे ताकि कली कसी हुई हो तो सुबह या सायंकाल पुष्प डंठल को सिकेटियर या तेज चाकू से काटकर पानीयुक्त प्लास्टिक बकेट में रखें। इसके बाद 20–20 डंठल बनाकर एवं अखबार में लपेटकर रबर बैण्ड से बाँध दें। कोरोगेटेड कार्डबोर्ड के 100 × 30 सेमी. या 50× 6–15 सेमी. के बक्से में पैक कर बाजार भेजना चाहिए ।

गुलाब का व्यवसाय

गुलाब की खेती व्यावसायिक स्तर पर करके काफी लाभ कमाया जा सकता है। गुलाब की खेती बहुत पहले से पूरी दुनिया में की जाती है। इसकी खेती पूरे भारतवर्ष में व्यवसायिक रूप से की जाती है। गुलाब के फूल डाली सहित या कट फ्लावर तथा पंखुड़ी फ्लावर दोनों तरह के बाजार में व्यापारिक रूप से पाए जाते है। गुलाब की खेती देश व विदेश निर्यात करने के लिए दोनों ही रूप में बहुत महत्वपूर्ण है। गुलाब को कट फ्लावर, गुलाब जल, गुलाब तेल, गुलकंद आदि के लिए उगाया जाता है। गुलाब की खेती मुख्यतः कर्नाटक, तमिलनाडु, महाराष्ट्रा, बिहार, पश्चिम बंगाल ,गुजरात, हरियाणा, पंजाब, जम्मू एवं कश्मीर, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश में अधिक की जाती है।